Peer Reviewed Refereed
Research Journal

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

Volume - X, Issue - IV
October - December - 2021
Marathi Part - I / Hindi

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

AJANTA

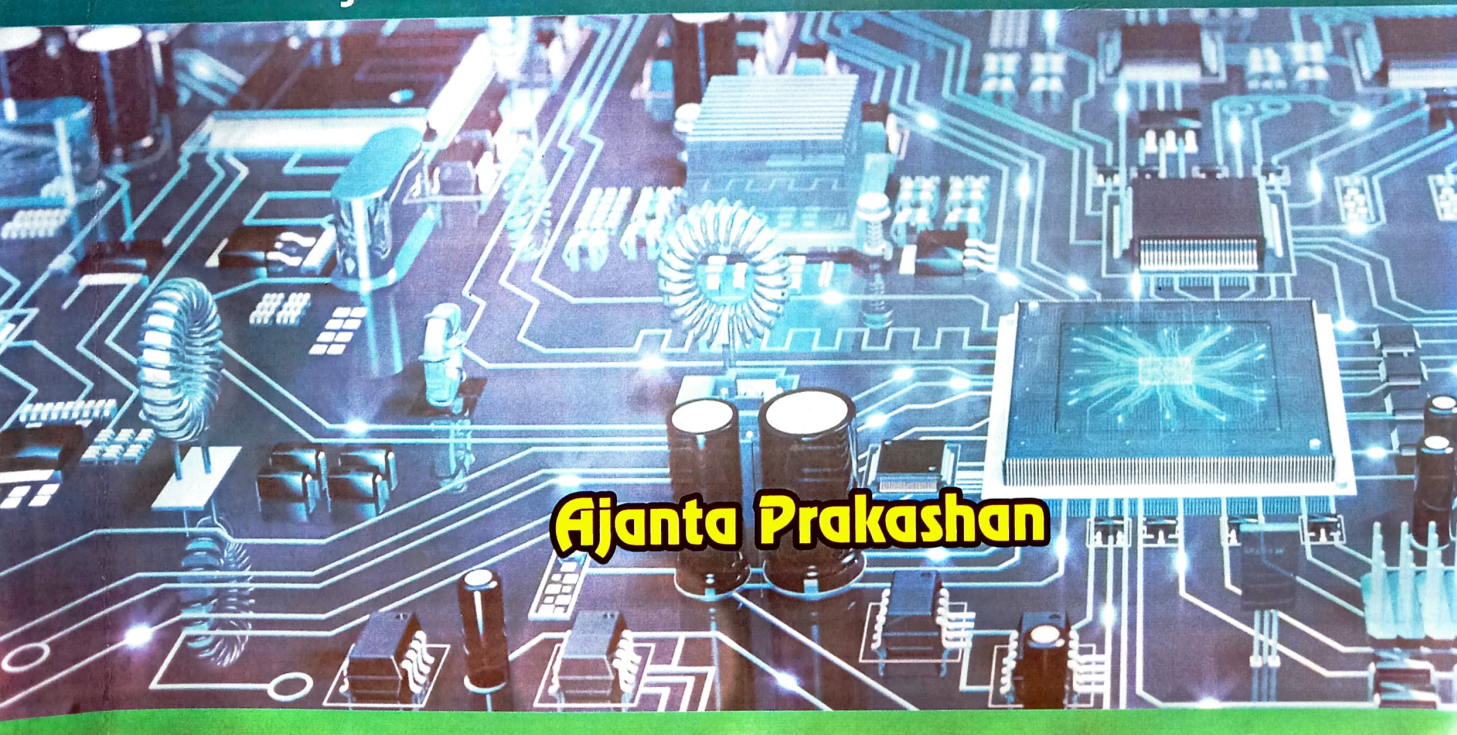

Ajanta Prakashan

VOLUME - X, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	अनुसंधान का अर्थ परिभाषा एवं महत्व **डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबूराव**	१-५
२	अनुसन्धान में चिन्तन प्रक्रिया - एक दृष्टिक्षेप **प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ**	६-११
३	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का शोध में प्रयोग **डॉ. कनक लता सिंह**	१२-१७

Late Rames... (ACS) College, Sonpeth
Parbhani

VOLUME - X, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com) AP - 14

१. अनुसंधान का अर्थ परिभाषा एवं महत्व

डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबूराव
हिंदी विभागाध्यक्षा, कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ.

प्रस्तावना

शोध अंग्रेजी शब्द 'रिसर्च' (Research) का पर्याय है । किंतु इसका अर्थ 'पुनः' खोज नहीं है अपितु गहन खोज है। इसके द्वारा हम कुछ नया अविष्क्रत कर उस ज्ञान परंपरा में कुछ नए अध्याय जोड़ते हैं । शोध कोई जड या यांत्रिक क्रिया नहीं है। यह एक बौद्धिक वैचारिक या ज्ञानात्मक कार्य है। निरंतर सक्रियता और सतर्क चिंतन से ही शोध कार्य में प्राण प्रतिष्ठा होती है। अनुसंधान (Reserach) किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज करना या विधिवत गवेषणा' करना होता है। निरंतर सक्रियता और सतर्क चिंतन से ही शोध कार्य में प्राण प्रतिष्ठा होती है । इसी संदर्भ में कार्ल पीयर्सन लिखते हैं- "सत्य तक पहुंचने का कोई छोटा मार्ग नहीं है, विश्व के ज्ञान को प्राप्त करने का कोई मार्ग नहीं है, शिवाय वैज्ञानिक पद्धति के द्वार में से गुजरने के । "अनुसंधान में जिज्ञासा समाधान करने की कोशिश की जाती है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुराने वस्तुओं एवं सिद्धांतों का पुनः परीक्षण करना, जिससे कि नए तथ्य प्राप्त हो सके, उसे शोध कहते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञासा का समाधान करने की कोशिश की जाती है।

शोध उस प्रक्रिया अथवा कार्य का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सुधाग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन- विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है ।

शोध का मूल बीज

मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चिरकाल से प्रकृति से संघर्ष करता आया है । पृथ्वी की अतल गहराइयों से लेकर आकाश की ऊंचाइयों तक कोई क्षेत्र उससे अछूता नहीं है। मनुष्य बुद्धि संपन्न प्राणी है। अतः वह अपने सचेतावस्था से जिज्ञासु रहा है। इसी जिज्ञासा से प्रेरित होकर उसने इस संसार के चराचर प्रवृत्ति तथा अपनी प्रकृति के अन्तःबाह्य रहस्यों को तथ्य रूप प्रदान कर मानव की ज्ञान संपदा में लगातार अभिवृद्धि की है । यही जिज्ञासा आधुनिक शोध का मूल बीज है। प्रागैतिहासिक काल से ही मानव भोजन, जल और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति से दम तोड़ संघर्ष करता आ रहा है । इसमें उसे आशातीत सफलता से प्रोत्साहित होकर मानव ने आज न केवल पृथ्वी की अतल गहराइयों से लेकर आकाश की अनंत ऊंचाइयों तक के रहस्य का उद्घाटन किया है । बल्कि दृष्टि से ओझल तथ्यों को भी उजागर किया है । वह ब्रह्मांड के अनेक अदृश्य रहस्य

के साथ ही मरणोपरांत के रहस्यों पर भी अनुसंधान कर रहा है । चराचर प्रकृति के अंतः बाह्य नाना रहस्यों के प्रति मानव की जिज्ञासा है । अपनी इसी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए उसने ज्ञान विज्ञान के अनेक नए द्वारों- मार्गों का आविष्कार किया। मानव की इसी सहज जिज्ञासा का विकसित रूप अनुसंधान है।

प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री 'डेविड बाप' कहते हैं- "नई सृष्टि का अर्थ यह हुआ कि यह न ही पुरानी क्रमों की नकल करती है, न ही उनकी मौलिक सच्चाई के विपरीत जाती है। वह पुराने क्रमों की हमारी समझ को नए संदर्भों में ढालती है और इसके साथ-साथ हमारे ज्ञान के आयाम को विस्तृत करती है।"[1] अतः यह स्पष्ट है कि भौतिक, अध्यात्मिक, कलात्मक या बौद्धिक प्रगति के लिए अनुसंधान एक सशक्त माध्यम है। और यह अनुसंधान मानव की सहज जिज्ञासा का ही विकसित रूप है।

अनुसंधान शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

अनुसंधान यह शब्द अनु + संधान से बना है। अनु उपसर्ग है। संधान में 'धा' मूल धातु है, जिसका अर्थ है धारण करना अथवा रखना । संधान को अनु उपसर्ग लगने से अनुसंधान शब्द बना है।

अनु का अर्थ है –पीछे लगना अनुसरण करना

संधान का अर्थ है– पूर्ण एकाग्रता से अनवरत परिश्रम और धैर्य से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना।

अतः अनुसंधान का पूर्ण अर्थ होता है- पूर्ण एकाग्रता से अनवरत परिश्रम और धैर्य से किसी विशिष्ट कार्य के पीछे लगना अथवा उसका अनुसरण करते रहना। अर्थात पूर्ण एकाग्रता धैर्य और परिश्रम से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना ही अनुसंधान है। अनुसंधान विशिष्ट रुचि, श्रम, धैर्य, त्याग और प्रतिभा तथा विद्वत्ता की लंबी तपस्या है । इस संदर्भ में सच्चे अनुसंधान के के प्रति कबीर का दोहा इस प्रकार है–

"जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ।
हौं बौरी ढूंँढन गई रही किनारे बैठ।।

अतः स्पष्ट है कि अनुसंधाता का ध्यान पूर्णतया लक्षनोंन्मुख होना चाहिए तथा अनुसंधान का कार्य तभी पूरा होता है।

परिभाषाएंँ

1. रुमेल के अनुसार - " ज्ञान को खोजना व्यवस्थित करना और सत्यापित करना शोध है।
2. रस्क के अनुसार - "शोध एक दृष्टिकोण है जांच- परख का तरीका और मानसिकता है"
3. रेडमैन और मोरी ने अपनी पुस्तक " द रोमांस ऑफ रिसर्च " में शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, "नवीन ज्ञान की प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को हम शोध कहते हैं ।"
4. अमेरिकी विश्वकोश- "नूतन ज्ञान के लिए निरंतर खोज अनुसंधान है।"

Sonpeth Warpudkar (ACS) College Dist. Parbhani

5. डॉ नगेंद्र -" किसी लक्ष्य को सामने रखकर दिशा विशेष में बढ़ना या किसी तथ्य का परीक्षण करना ही अनुसंधान है।"

6. डॉ. नंददुलारे वाजपेई - "शोध शब्द का अर्थ है अज्ञात तथ्यों को प्रकाश में लाना, संयोजन संचयन करके संबंधित सामग्री एकत्र करना और सुव्यवस्थित निर्णय देना।"[2]

अनुसंधान का महत्व

आज विश्व की जो भी बहुमुखी प्रगति हुई है वह सुनिश्चित रूप से वैज्ञानिक एवं साहित्यिक अनुसंधान के फलस्वरूप ही हुई है । प्राय: मानव चेतना का उज्जवल एवं विजेता रूप आवश्यकताओं से प्रताड़ित होकर ही उभरता है। इस प्रकार अनुसंधान ज्ञान के क्षेत्र के साथ-साथ समाज की भी वृद्धि करता है। ज्ञान के विकास एवं आनंद की प्राप्ति के लिए इसका महत्व अधिक है। मानव अन्य प्राणियों की तुलना में अलग है। उसके पास बुद्धि संस्कृति और सत्यता है । मानव को बुद्धि ,मन और रदय की आवश्यकता की पूर्ति के लिए अनुसंधान का सहारा लेना पड़ता है ।

अनुसंधान की आवश्यकता के बारे में 'क्वार्टर गुड'नामक विद्वान ने 'Mrtheods of Research' (अनुसंधान की पद्धतियाॅॅ)किताब में लिखा है

"ज्ञान के प्रति मनुष्य की आकांक्षा पूर्ति उसकी विवेक शक्ति का विकास और क्षमता की वृत्ति शर्मसार को कम करना कष्टों को दूर करना और सुख सुविधाओं का विस्तार से ही अनुसंधान के भौतिक उद्देश्य है । जीवन की समृद्धि और मानव के उत्कर्ष में योगदान करना ही अनुसंधान की चरम सार्थकता है।"[3]

अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए है

- मनुष्य के पास होने वाले मूल ज्ञान में वृद्धि करना और उसकी वैज्ञानिकता बढ़ाने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता है।
- शोध से व्यवहारिक समस्याओं का समाधान होता है। -अनुसंधान में तर्क और तथ्य को महत्व होता है। इसकी महत्ता अनुसंधान में स्थापित की जाती है ।
- अनुसंधान पूर्वाग्रह के निदान और निवारण में सहायक है।
- चिंतन एवं अनुभूति की सुविधाओं के विस्तार के लिए अनुसंधान की आवश्यकता होती है । अनुसंधान में चिंतन को अधिक महत्व होता है।
- अनुसंधान से व्यक्ति का बौद्धिक विकास होता है। -मानव का मन, मस्तिष्क और ह्रदय को उन्नत बनाने और उसमें नई चेतना पैदा करने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता होती है।
- अनुसंधान मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है। तथा ज्ञान भंडार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।
- देशी विदेशी मानवता को ज्ञान से समृद्ध बनाने के लिए भी अनुसंधान की आवश्यकता है।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

- अनुसंधान जिज्ञासा मूल प्रवृत्ति की संतुष्टि करना है। -अनुसंधान एक तरह का औपचारिक प्रशिक्षण है। -अनुसंधान या शोध सामाजिक विकास का सहायक है। -
- अनुसंधान या शोध ज्ञान के विविध पक्षों में गहनता और सूक्ष्मता लाता है।
- अनुसंधान नई शैली और रचनात्मकता के विकास के लिए हो सकता है ।
- अनुसंधान नए सिद्धांत का सामन्यीकरण करने के लिए हो सकता है।

इस प्रकार अनुसंधान ज्ञान के क्षेत्र के साथ-साथ समाज की भी वृद्धि करता है। ज्ञान के विकास एवं आनंद की प्राप्ति के लिए इसका महत्व अधिक है। आज के ज्ञान विज्ञान के युग में अनुसंधान का महत्व दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। ज्ञान के प्रति मनुष्य के मन में व्याप्त चिरकालीन आकांक्षा जागृत करने और उसकी पूर्ति का विकास करने का यह एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है। कार्यक्षमता में वृद्धि तथा श्रमभार को कम कर के कष्टों को दूर करने के लिए अनुसंधान का अत्याधिक महत्व है। " अनुसंधान किसी भी प्रकार का हो वह ज्ञानवर्धक होता है। उसका उद्देश्य परंपरागत अर्जित ज्ञान के शोधन द्वारा सत्य की प्राप्ति है ।अनुसंधान सांस्कृतिक उपलब्धियों एवं शाश्वत मूल्यों को प्रतिस्थापित करता है।" 4 अनुसंधान का मूल रूप उसका अपना एक विशिष्ट महत्व है। सर्वप्रथम इसकी महत्ता प्रामाणिकता की ओर जाती है । क्योंकि आज का युग वैज्ञानिक युग है। व्यक्ति बिना प्रमाण के किसी बात को यूं ही आत्मसात नहीं करता है। आज वह प्रत्येक तथ्य प्रामाणिकता की मांग करता है। शोध का महत्व प्रामाणिकता के कारण और भी बढ़ जाता है। जो आगे आने वाली पीढ़ी के लिए फलदायक सिद्ध होता है। कितनी अज्ञात बातें जो ज्ञान के नए क्षेत्र में उद्घाटित होती है। ज्ञान के नए महत्वपूर्ण क्षेत्रों के उद्घाटन के लिए अनुसंधान का अत्याधिक महत्व है।

इसप्रकार से किसी भी प्रकार के अध्ययन में वैज्ञानिकता एवं विशिष्टता व विशेषज्ञता लाने के लिए अनुसंधान का अत्याधिक महत्व है। "अनुसंधान का मूल आधार मस्तिष्क की वह प्रक्रिया है, जिसे चिंतन कहते हैं। शोध के आरंभ से लेकर अंत तक जितने क्रियाकलाप होते हैं उनकी दिशा और रूप निर्दिष्ट करने वाली प्रवृत्ति चिन्तन ही है।

शोध प्रबंध की उत्कृष्टता की मुख्य आधार भी मस्तिष्क की सतत जागरूकता और सक्रियता है। विषय की संभावनाओं तथा सीमाओं का निर्णय, उपलब्ध सामग्री का संचयन और विश्लेषण एवं तर्क पद्धतियों द्वारा अपने मंतव्यों की स्थापना में मस्तिष्क का ही कार्य प्रमुख होता है। अतः अनुसंधान में इस चिंतन प्रक्रिया के बारे में चिंतन करना भी उपयोगी होगा।"[5] अनुभवों को अपने आप में एक बहुत बड़ा शिक्षक और ज्ञान- स्त्रोत कहा जाता है। "प्राय: हम सभी किसी भी नवीन बात की जानकारी और ज्ञान को ग्रहण करने हेतु अपनी ज्ञानेंद्रियों से प्राप्त निजी अनुभवों की सहायता लेने का प्रयास करते रहते हैं। इसलिए ज्ञानेंद्रियों को (आंख, नाक, कान, जीभ तथा त्वचा) ज्ञान के पाँच दरवाजों की संज्ञा दी जाती है। अपने स्वयं के प्रयत्न और अनुभवों से प्राप्त इस प्रकार का ज्ञान यद्यपि कई दृष्टियों से काफी

विश्वसनीय और वैध माना जाता है।"[6] इसप्रकार से अनुसंधान इमानदारी से की गई एक प्रक्रिया है। इसमें गहनता से अध्ययन किया जाता है। और विवेक एवं समझदारी से काम लिया जाता है। चूँकि यह एक लंबी प्रक्रिया है।

अतः इसमें धैर्य की परम आवश्यकता होती है।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

सारांश

शोध या अनुसंधान जिज्ञासा मूल प्रवृत्ति की संतुष्टि करता है। शोध या अनुसंधान से व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास होता है। कठोर परिश्रम, विवेक, लगन

एकनिष्ठता पाठ के आधार पर किसी महत्वपूर्ण तथ्य की नई व्याख्या करना ही अनुसंधान है। अनुसंधान केवल नवीन तथ्यों की खोज तक ही सीमित नहीं है बल्कि भूले हुए तथ्य को पुनः प्रकाश में लाना और उसे पूर्व ज्ञान की श्रंखला से जोड़ देना भी है। मानव अपने चिंतन स्वभाव से प्रेरित होकर कभी ज्ञात तथ्यों का समर्थन करता है। कभी उसकी नई व्याख्या प्रस्तुत करता है। अतः हल करने की व्यवस्थित तथा तटस्थ प्रक्रिया का नाम ही अनुसंधान है।

संदर्भ

1. अनुसंधान सर्जन एवं प्रक्रिया - डाॅ अर्जुन के.तड़वी- पृष्ठ 46
2. अनुसंधान : प्रक्रिया एवं रूपरेखा- डॉ देवीदास यशवंत इंगळे- पृष्ठ 18
3. अनुसंधान प्रक्रिया एवं रूपरेखा -डाॅ देवीदास यशवंत इंगळे - पृष्ठ 19
4. अनुसंधान: प्रक्रिया एवं रूपरेखा- डाॅ. देवीदास यशवंत इंगळे - पृष्ठ 10
5. अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया - एस. एन. गणेशन - संस्करण 2009 - पृष्ठ 21
6. व्यावहारिक विज्ञापनों में अनुसंधान विधियांॅ - एस. के. मंगल शुभा मंगल - पृष्ठ 6

PRINCIPAL
Late Ram... ...kar (ACS)
College ... Dist. Parbhani